قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿88﴾

८८. उनकी क़ौम के घमण्डी सरदारों ने कहा हे शुऐब! हम तुम्हें और जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको ज़रूर अपने नगरों से निकाल देंगे वरन् तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ, उन्होंने कहा कि जबकि हम उस से घिन करते हों।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿89﴾

८९. हम तो अल्लाह पर झूठ का आरोपण करेंगे अगर हम तुम्हारे धर्म में फिर से आ गये जबकि अल्लाह ने हमें उससे आज़ाद कर दिया है और हमारे लिये उस में फिर से आ जाना मुमकिन नहीं, लेकिन यह कि अल्लाह चाहे जो हमारा रब है। हमारे रब ने हर चीज़ को अपने इल्म की परिधि (इहाते) में ले रखा है, हम ने अपने अल्लाह पर ही भरोसा कर लिया, हे हमारे रब! हमारे और हमारे लोगों के बीच फ़ैसला कर दे सच्चाई के साथ और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है।

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿90﴾

९०. और उनकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने कहा कि अगर तुम ने शुऐब की इताअत की तो उस वक़्त तुम बेशक नुक़सान उठाने वाले हो जाओगे।[1]

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿91﴾

९१. तो उनको भूकम्प ने आ पकड़ा, इसलिए वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।[2]

---

[1] अपने बुज़ुर्गों के दीन को छोड़ना और माप-तौल में कमी न करना, यह उन के नज़दीक नुक़सान वाली बात थी, सच्चाई यह थी कि इस में उन्हीं का फ़ायेदा था, लेकिन दुनिया वालों की नज़र में फ़ायेदा ही सभी कुछ होता है, जो माप-तौल में डंडी मारने से उन्हें मिल रहा था, वह ईमानवालों के दीर्घगामी (मुस्तक़िल) फ़ायदे के लिए उसे क्यों छोड़ते?

[2] यहाँ رَجْفَة (रजफ़:) आया है, जिसका मतलब भूकम्प (ज़लज़ला) है, और सूर: हूद आयत नं॰ ९४ में صَيْحَة लफ़्ज़ जिसका मतलब "चीख़" इस्तेमाल हुआ है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि अज़ाब में यह सब हुआ, यानी छाया वाले दिन अज़ाब आया, सब से पहले बादलों की छाया में आग के शोले चिंगारियाँ, फिर आकाश से बहुत तेज़ गर्जन हुई और धरती में भूकम्प आया, जिस की वजह से उनकी आत्माओं (रूहों) ने शरीर छोड़ दिया और अजीवित लाश बन कर पक्षियों की तरह घुटनों में मुँह देकर औंधे के औंधे पड़े रह गये।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ (92)

९२. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, उनकी यह हालत हो गयी कि जैसे उन (घरों) में कभी बसे ही नहीं थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही नुक़सान में पड़ गये।

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ (93)

९३. उस वक़्त शुऐब उन से मुंह मोड़ कर चले और कहने लगे कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मैंने अपने रब का पैग़ाम तुम्हें पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी शुभचिन्ता (ख़ैरख़्वाही) की, फिर मै उन काफिरों पर दुखी क्यों हूँ?

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ (94)

९४. और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा कि वहां के निवासियों को हम ने रोग और तकलीफ़ से पकड़ा न हो, ताकि वे गिड़गिड़ायें (विनती करें)।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (95)

९५. फिर हम ने उस दरिद्रता को ख़ुशहाली से बदल दिया, यहां तक कि जब वे ख़ुशहाल हो गये और कहने लगे कि हमारे बुज़ुर्गों को भी तंगी और तरक्की का सामना करना पड़ा, तो हम ने अचानक उन को पकड़ लिया और उन को ख़बर भी न थी।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (96)

९६. और अगर उन नगरों के रहने वाले ईमान लाते और परहेज़गारी बरतते तो हम आसमान और ज़मीन की बरकतों के दरवाज़े उन पर खोल देते, लेकिन उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन्हें उन के बुराईयों के सबब पकड़ लिया।

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ (97)

९७. क्या फिर भी इन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गये हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े जिस वक़्त वह नींद में हों।

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ (98)

९८. और क्या उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गये हैं? कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े में आये जिस वक़्त वे खेलों में मसरूफ़ हों।

९९. क्या वह अल्लाह की योजना से बेख़ौफ़ हो गये, सो अल्लाह की योजना से नुक़सान वाले लोग[1] ही बेख़ौफ़ होते हैं।

१००. तो क्या जो लोग धरती में उस के रहने वालों की तबाही के बाद वारिस बने हैं उन्हें इल्म नहीं हुआ कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों के सबब उन्हें मुसीबत में डाल दें और उन के दिलों पर बन्द लगा दें फिर वे सुन न सकें।[2]

१०१. इन नगरों की कुछ घटनायें हम आप को बता रहे हैं और उन के रसूल उन के पास दलील सहित आये फिर भी जिसे उन्होंने पहले नहीं माना उसे फिर मानने लायक़ न हुये, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

१०२. और हम ने उन के ज़्यादातर लोगों को अहद का पालन करते नहीं पाया और हम ने उन में से ज़्यादातर को फ़ासिक़ पाया।

१०३. फिर उन के बाद हम ने (रसूल) मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा,[3] तो उन्होंने उनका हक़ पूरा न किया, फिर देखो कि फ़ासिदियों का

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿99﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿100﴾

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿101﴾

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿102﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿103﴾

---

[1] इन आयतों में अल्लाह तआला ने सब से पहले यह बयान किया है कि ईमान (विश्वास) और तक़्वा ऐसा विषय है कि जिस बस्ती के लोग उसे अपना लें उस पर अल्लाह तआला आकाश और धरती के धन-सम्पत्तियों के दरवाज़े खोल देता है, यानी आवश्यकतानुसार आकाश से वर्षा करता है और धरती को उस से सिंचाई करके उपज को बढ़ाता है। नतीजतन तरक़्क़ी और ख़ुशहाली होती है, लेकिन इसके ख़िलाफ़ झुठलाने वाले और कुफ़्र का रास्ता अपनाने वाली क़ौम अल्लाह के अज़ाब के अधिकारी (मुस्तहिक़) होते हैं, फिर मालूम नहीं होता कि रात-दिन किस वक़्त अज़ाब आ पड़े और खेलती-खाती इस बस्ती को एक पल में खण्डहर बना कर रख दे, इसलिए अल्लाह के इन अज़ाबों से बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए, इस बेफ़िक्री का नतीजा सिर्फ़ नुक़सान के सिवा कुछ नहीं। مَكر (मकर) के मतलब के लिए देखिए सूर: आले इमरान आयत ५४ की तफ़्सीर।

[2] यानी गुनाहों के नतीजे में केवल अज़ाब ही नहीं आता है, दिलों पर भी ताले लग जाते हैं। फिर बड़े से बड़े अज़ाब भी उनको बेख़ौफ़ी की नींद से नहीं जगा सकते।

[3] यहाँ से मूसा का बयान शुरू हो रहा है, जो बयान किये गये नबियों के बाद आये, जो बहुत बड़े सम्मानित (इज़्ज़त वाले) पैग़म्बर थे, जिन्हें मिस्र के फ़िरऔन और उसकी जनता के पास निशानियाँ और मोजिज़े दे कर भेजा गया था।

अंजाम कैसा रहा।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰفِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَٰلَمِينَ (104)

१०४. और मूसा ने फ़रमाया: ऐ फ़िरऔन! मैं सारी दुनिया के रब की तरफ़ से पैग़म्बर हूं।

حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ (105)

१०५. मेरे लिए यही बेहतर है कि सच के सिवाय अल्लाह पर कोई बात न बोलूं, मैं तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी निशानी भी लाया हूं, इसलिए तू इस्राईल की औलाद को मेरे साथ भेज दे।[1]

قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِـَٔايَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ (106)

१०६. उस (फ़िरऔन) ने कहा अगर आप कोई मोजिज़ा लेकर आये हैं तो उसे पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ (107)

१०७. फिर आप ने अपनी छड़ी डाल दी तो अचानक वह एक साफ़ अजगर सांप बन गया।

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ (108)

१०८. और अपना हाथ बाहर निकाला तो वह अचानक सभी देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया।

قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٌ (109)

१०९. फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि यह बड़ा माहिर जादूगर है।

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ (110)

११०. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकलना चाहता है फिर तुम लोग क्या विचार देते हो?

قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ (111)

१११. उन्होंने कहा कि आप उसे और उस के भाई को वक़्त दीजिए और नगरों में इकट्ठा करने वालों को भेज दीजिए।

[1] इस्राईल की औलाद जिनका मूल निवास सीरिया का इलाक़ा था, हज़रत यूसुफ़ के वक़्त में मिस्र चली गयी थी फिर वहीं के निवासी हो गये। फ़िरऔन ने उन्हें दास बना लिया था और उन पर तरह-तरह के ज़ुल्म करता था जिसका तफ़सीली बयान सूर: अल बक़र: में गुज़र चुका है और आगे भी आयेगा। फ़िरऔन और उस के दरबार के मंत्रियों ने जब हज़रत मूसा की दावत को ठुकरा दिया तो हज़रत मूसा ने दूसरी मांग की कि इस्राईल की औलाद को आज़ाद कर दे ताकि यह अपने असल मकान पर जाकर मान-सम्मान की ज़िन्दगी गुज़ारें और अल्लाह की इबादत करें।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿112﴾

११२. कि वे सभी माहिर जादूगरों को आप के सामने लाकर हाज़िर करें ।[1]

وَجَآءَ ٱلسَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓا۟ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿113﴾

११३. और जादूगर फ़िरऔन के पास आये और कहा कि अगर हम सफल हो गये तो क्या हमारे लिए कोई बदला है?

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿114﴾

११४. उस ने कहा हाँ, और तुम सब क़रीबी लोगों में हो जाओगे ।[2]

قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِىَ وَإِمَّآ أَن نَّكُونَ نَحْنُ ٱلْمُلْقِينَ ﴿115﴾

११५. उन (जादूगरों) ने कहा कि ऐ मूसा ! चाहे आप डालिए या हम ही डालें ।

قَالَ أَلْقُوا۟ ۖ فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ سَحَرُوٓا۟ أَعْيُنَ ٱلنَّاسِ وَٱسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿116﴾

११६. (मूसा ने) कहा कि तुम ही डालो तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी और उनको डरा दिया, और एक तरह का बड़ा जादू दिखाया ।

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿117﴾

११७. और हम ने मूसा को हुक्म किया कि अपनी छड़ी डाल दो, फिर वह अचानक उन के स्वांग (ढोंग) को निगलने लगी ।

فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿118﴾

११८. अत: सच ज़ाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा ।

---

[1] हज़रत मूसा के वक़्त में जादूगरों की बड़ी इज़्ज़त थी, इसीलिए हज़रत मूसा के पेश किये मोजिज़े को भी उन्होंने जादू समझा और जादू के ज़रिये उस के काट की योजना बनायी, जिस तरह से दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया कि फ़िरऔन और उस के दरबारियों ने कहा, "हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि अपने जादू की ताक़त से हमें अपनी धरती से निकाल दे, और हम भी इस जैसा जादू इस के मुक़ाबिले में लायेंगे, इस के लिए किसी ख़ास मुक़ाम और वक़्त का मुक़र्रर हम ख़ुद करें जिसका दोनों पालन करें । हज़रत मूसा ने कहा कि नौरोज़ का दिन और चाश्त का वक़्त है, इस हिसाब से लोग जमा हो जायें ।" (सूर: ताहा- ५७ से ५९)

[2] जादूगर चूँकि दुनिया पाने की तमन्ना रखते थे, इसलिए उन्होंने जादू की तालीम ली थी, इसलिए अच्छा मौक़ा देखा कि राजा को हमारी ज़रूरत हुई है, क्यों न मौक़ा का फ़ायेदा उठा कर ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायेदा उठायें । इसलिए उन्होंने कामयाबी के बाद उसके बदले में माँग पेश कर दी, जिस पर फ़िरऔन ने कहा कि केवल धन ही नहीं मिलेगा बल्कि हमारे क़रीबी लोगों में शामिल हो जाओगे ।

११९. अत: वह लोग इस मौक़ा पर हार गये और बहुत ज़लील होकर फिरे।	فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿119﴾
१२०. और जादूगर सज्दे में गिर गये।	وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿120﴾
१२१. कहने लगे हम ईमान लाये सारी दुनिया के रब पर।	قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿121﴾
१२२. जो मूसा और हारून का भी रब है।[1]	رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿122﴾
१२३. फ़िरऔन ने कहा तुम उस (मूसा) पर ईमान मेरे हुक्म से पहले ले आए, वेशक यह एक साज़िश है जो तुम ने नगर में उस के निवासियों को उस से निकालने के लिये रच लिया है, अत: तुम्हें जल्द पता चल जायेगा।	قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿123﴾
१२४. मैं तुम्हारे एक तरफ़ का हाथ और दूसरे तरफ़ की टाँग काटूँगा, फिर तुम सब को फाँसी पर लटका दूँगा।	لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿124﴾
१२५. (उन्होंने) जवाब दिया कि हम (मर कर) अपने रब के पास ही जायेंगे।[2]	قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿125﴾
१२६. और तुम ने हम में यही बुराई तो देखा है कि हम ने अपने रब की आयतों (लक्षणों) पर यक़ीन कर लिया जब वह हमारे पास आ गईं, हे हमारे रब! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसलमान ही रहते हुए मौत दे।	وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿126﴾

[1] जादूगरों ने, जो जादू की कला और उसकी असली हक़ीक़त को जानते थे, यह देखा तो समझ गये कि मूसा ने जो कुछ यहाँ पेश किया है जादू नहीं है, यह हक़ीक़त में अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह की मदद से ही यह मोजिज़ा पेश किया है जिस ने एक पल में हम सभी की कला पर पानी फेर दिया, इसलिए उन्होंने मूसा पर ईमान लाने का एलान कर दिया, इससे यह बात वाज़ेह हो गयी कि झूठ-झूठ है, चाहे उस पर कितने ही ख़ूबसूरत कपड़े चढ़ा दिये जायें और सच-सच ही है, चाहे उस पर कितने ही पट डाल दिये जायें, आख़िर में जीत सच की होती है।

[2] इसका मतलब यह है कि अगर तू हमारे साथ ऐसा सुलूक करेगा तो तुझे भी इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि क़यामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे इस गुनाह की सख़्त सज़ा देगा, इसलिए कि हम सभी को मरकर उसी के पास जाना है, उसकी सज़ा से कौन बच सकता है? यानी फ़िरऔन को दुनिया के अज़ाब के मुक़ाबले आख़िरत के अज़ाब से डराया गया है।

१२७. और फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उसकी जाति को यूं ही रहने देंगे ताकि धरती पर फ़साद करें,[1] और आप को और आप के देवताओं को छोड़ दें, उस ने कहा हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को जिन्दा रहने देंगे, और हम उन पर प्रभावी (ग़ालिब) हैं।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ (127)

१२८. मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह (तआला) की मदद लो और सब्र रखो यह धरती अल्लाह (तआला) की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है और आख़िरी कामयाबी उन्हीं की होती है जो अल्लाह से डरते हैं।[2]

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ (128)

१२९. उन्होंने कहा कि आप के आने से पहले भी[3] हमें कष्ट दिया गया और आप के आने के बाद भी, उन्होंने कहा कि जल्द ही तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मनों को बरबाद कर देगा और इस धरती की विरासत तुम को देगा फिर यह देखेगा कि तुम्हारा अमल कैसा है?

قَالُوا أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ (129)

१३०. और हम ने फ़िरऔन की आल को सूखे और फलों की कमी के ज़रिये घेर लिया ताकि वह नसीहत हासिल कर लें।[4]

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ (130)

---

[1] यह हर दौर के गुमराहों का काम रहा है कि वे ईमानवालों को फ़सादी और उन के ईमान की दावत और एकेश्वरवाद (तौहीद) को फ़साद से मुवाज़ना करते हैं फ़िरऔन के पैरोकारों ने भी यही किया।

[2] जब फ़िरऔन की तरफ़ से दोबारा जुल्म शुरू हुआ तो हज़रत मूसा ने अपनी जाति के लोगों को अल्लाह की मदद हासिल करने और सब्र करने की शिक्षा दी कि अगर तुम सच्चे रास्ते पर रहे तो आख़िर में धरती का राज्य तुम्हें ही हासिल होगा।

[3] यह इशारा उन ज़ुल्मों (अत्याचारों) की तरफ़ है जो मूसा के जन्म से पहले उन पर होते रहे।

[4] फ़िरऔन की औलाद से मुराद फ़िरऔन के पैरोकार हैं और सेनीन (سنين) से अकाल या सूखा यानी बारिश की कमी और पेड़ों में कीड़े लग जाने के सबब पैदावार में कमी है, इस इम्तेहान से मक़सद यह था कि शायद वह इस ज़ुल्म और घमण्ड से रुक जायें जिस में वे मुब्तिला हैं।

فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوا بِمُوسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ اَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿131﴾

१३१. अगर उन के पास भलाई आती है तो कहते हैं कि यह हमारे लिए होना ही चाहिए और अगर परेशानी आती है तो मूसा और उनके पैरोकारों से अपशगुन लेते हैं,[1] सुन लो उन का अपशगुन अल्लाह के पास है[2] लेकिन उन में ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿132﴾

१३२. और उन्होंने कहा, कि हमारे पास जो भी निशानी हम पर जादू चलाने के लिये लाओ हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿133﴾

१३३. फिर हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियाँ और जूयें और मेढक और ख़ून भेजा अलग-अलग निशानियाँ,[3] फिर उन्होंने अहंकार किया और वह मुजरिम लोग थे।

---

[1] حَسَنَة (हसनः) से मुराद अनाज और फलों की बहुतायत और سَيِّئَة का मतलब है बुराई, जिस से मुराद हसनः के ख़िलाफ़ अकाल, सूखा और पैदावार में कमी है।

[2] طائر का मतलब है "उड़ने वाला" यानी पक्षी। क्योंकि वे लोग पक्षी के दायें और बायें उड़ने से शुभ और अशुभ लिया करते थे, इसलिए यह कलिमा पूरी तरह से 'फ़ालनामा' के लिए इस्तेमाल होने लगा और यहाँ यह इसी मतलब में इस्तेमाल हुआ है।

[3] तूफ़ान से मुराद है बाढ़, बहुत ज़्यादा वर्षा, जिस से हर चीज़ डूब गयी या मुर्दों की ज़्यादा तादाद है, जिस से हर घर में दुख के बादल छा गये। جراد (जराद) टिड्डी को कहते हैं। टिड्डी दल का हमला फसलों की बरबादी का सूचक है और इस के लिए मशहूर है, ये टिड्डियाँ उन की फसलों और फलों को खाकर चट कर जातीं। قُمَّل (क़ुम्मल) से मुराद जूं जो इंसान के शरीर और कपड़ों और बालों में हो जाती हैं या घुन का कीड़ा जो अनाज में लग जाता है, तो उस के ज़्यादातर हिस्से को ख़त्म कर देता है। जूं से इंसान को नफ़रत भी होती है और उसकी अधिकता से बहुत कठिनाई भी, और जब यह अज़ाब के रूप में हो तो उसकी कठिनाई का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इस तरह घुन का अज़ाब भी अर्थिक स्थिति को खोखला कर देने के लिए काफ़ी है। ضَفَادِع अरबी भाषा में ضِفدِع (ज़िफ़दअ) का बहुवचन (जमा) है। यह मेंढक को कहते हैं, जो पानी, धरती और झोपड़ियों के छप्परों में रहता है, यह मेंढक उन के भोजन मे, बिस्तरों पर, रखे हुए अनाजों में यानी हर जगह पर और हर तरफ़ मेंढक ही मेंढक हो गये, जिस से उनका खाना-पीना सोना और आराम करना कठिन हो गया। دَم (दम) का मतलब ख़ून है, जिसका मतलब है कि पानी का ख़ून बन जाना, इस तरह पानी पीना उन के लिए नामुमकिन हो गया। कुछ ने ख़ून का मतलब नकसीर का रोग लिया है यानी हर इंसान की नाक से ख़ून जारी हो गया। آيات مُفَصَّلات यह स्पष्ट (वाज़ेह) और अलग-अलग चमत्कार (मोजिज़े) थे, जो समय-समय से उन के पास आये।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يٰمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ﴿134﴾

१३४. और जब उन पर कोई अज़ाब आता तो कहते कि हे मूसा ! हमारे लिये अपने रब से उस वादे के ज़रिये जो आप को दिया दुआ कर दीजिये, अगर आप ने हम से अज़ाब दूर कर दिया तो हम ज़रूर आप पर ईमान ले आयेंगे और आप के साथ इस्राईल के बेटों को भेज देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿135﴾

१३५. फिर जब हम उन से उस अज़ाब को एक ख़ास वक़्त तक कि उस तक उनको पहुँचना था, हटा देते तो वे तुरंत वचन भंग (अहद शिकनी) करने लगते।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غٰفِلِينَ ﴿136﴾

१३६. फिर हम ने उन से बदला लिया यानी उनको समुद्र में डूबो दिया, इस वजह से कि वे हमारी निशानियों को झुठलाते थे और उन से बहुत असावधानी (ग़फ़लत) बरतते थे।

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشٰرِقَ الْأَرْضِ وَمَغٰرِبَهَا الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۙ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿137﴾

१३७. और हम ने उन लोगों को जो बहुत कमज़ोर गिने जाते थे उस धरती के पूरब और पश्चिम का मालिक बना दिया जिस में हम ने बरकतें रखी हैं, और आप के रब का नेक वादा बनी इस्राईल के बारे में उन के सब्र के सबब पूरा हो गया और हम ने फ़िरऔन और उस की क़ौम के बनाये गये कारख़ानों को और जो ऊँचे मकान तामीर करते थे सब को तहस-नहस कर दिया।[1]

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلٰىٓ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۚ قَالُوا يٰمُوسَى اجْعَلْ لَنَآ إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿138﴾

१३८. और हम ने बनू इस्राईल (इस्राईल के बेटों) को समुद्र के पार उतार दिया, फिर उन का एक ऐसी जाति पर गुज़र हुआ जो अपने कुछ बुतों (प्रतिमाओं) से लगे बैठे थे, कहने लगे कि हे मूसा ! हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य

---

[1] उद्योग से मुराद कल-कारख़ाने, मकान और हथियार वग़ैरह है, और يعرشون "जो वह ऊँचा उठाते थे" से मुराद ऊँचे-ऊँचे घर भी हो सकते हैं और अंगूरों आदि की लतायें भी जो वह छप्परों पर चढ़ाते थे। मतलब यह हुआ कि उन के शहरों के ऊँचे-ऊँचे मकान, उद्योग, हथियार और दूसरे सामान भी बरबाद कर दिया और उन के बाग़ भी।

मुक़र्रर कर दीजिए, जैसे उन के यह देवता हैं आप ने फ़रमाया: हक़ीक़त में तुम लोगों में बड़ी जिहालत है ।[1]

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿139﴾

१३९. यह लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह नाश कर दिया जायेगा और उनका यह काम सिर्फ़ वातिल (ग़लत) है ।

قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿140﴾

१४०. फ़रमाया कि क्या अल्लाह (परमेश्वर) के सिवाय और किसी को तुम्हारा माबूद मुक़र्रर कर दूं, अगरचे उस ने सारे जहाँ वालों पर तुम्हें प्रधानता (फ़ज़ीलत) दी है ।

وَإِذْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿141﴾

१४१. और वह वक़्त याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के पैरोकारों से बचा लिया जो तुम्हें कड़ी सज़ायें देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे और इस में तुम्हारे रब की तरफ़ से भारी आज़माईश थी ।

وَوَاعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَاهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿142﴾

१४२. और हम ने मूसा को तीस रात का वादा दिया और दस ज़्यादा रात से उसको पूरा किया, इस तरह उन के रब का वक़्त पूरा चालीस रात का हो गया, और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे (जाने के) बाद इन (क़ौम) का इंतेज़ाम (प्रबन्ध) करना और सुधार करते रहना और फ़सादी लोगों के रास्ते की इत्तेबा न करना ।[2]

---

[1] इस से बड़ी जिहालत और बेवक़ूफ़ी और क्या होगी कि जिस अल्लाह ने उन्हें फ़िरऔन जैसे बड़े दुश्मन से न केवल आज़ादी दिलाई बल्कि उनकी आँखों के सामने उसे उसकी सेना के साथ डूबो दिया और उन्हें मोजिज़ा से समुद्र पार करा दिया । वे समुद्र के पार करते ही अल्लाह को भूल कर ख़ुद बनाये गये देवता खोजने लगे, कहते हैं यह मूर्तियाँ गाय की शक्ल की थीं, जो पत्थर की बनी थीं ।

[2] हज़रत हारून ख़ुद नबी थे, सुधार करना उन की ज़िम्मेदारी में शामिल था, हज़रत मूसा ने सिर्फ़ चेतावनी और सावधानी के लिये यह नसीहतें दीं यहाँ मीक़ात से मुराद मुक़र्रर समय है ।

१४३. और जब मूसा हमारे वक़्त पर आये और उन के रब ने उन से बातें कीं तो उन्होंने विनय (अर्ज़) किया कि हे मेरे रब ! मुझे अपना दीदार करा दे मैं तुझे एक पल देख लूँ, आदेश हुआ कि तुम मुझको कभी भी नहीं देख सकोगे, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, अगर वह अपनी जगह पर खड़ा रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे, फिर उन के रब ने जब उस पर रौशनी डाली तो तजल्ली (प्रकाश) ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब होश में आये तो कहा कि बेशक आप पाक हैं, मैं आप से तौबा करता हूँ और मैं सब से पहले आप पर ईमान लाता हूँ।

وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ قَالَ
رَبِّ أَرِنِىٓ أَنظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرَىٰنِى وَلَٰكِنِ
ٱنظُرْ إِلَى ٱلْجَبَلِ فَإِنِ ٱسْتَقَرَّ مَكَانَهُۥ فَسَوْفَ
تَرَىٰنِى ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُۥ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُۥ دَكًّا
وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحَٰنَكَ
تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلْمُؤْمِنِينَ (143)

१४४. हुक्म हुआ कि हे मूसा! मैंने अपनी रिसालत और अपने साथ कलाम से दूसरे लोगों पर तुम्हें फ़ज़ीलत दी है तो जो कुछ मैं ने तुम को अता किया है उसे ले लो और शुक्र करो।[1]

قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّى ٱصْطَفَيْتُكَ عَلَى ٱلنَّاسِ بِرِسَٰلَٰتِى
وَبِكَلَٰمِى فَخُذْ مَآ ءَاتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ
ٱلشَّٰكِرِينَ (144)

१४५. और हम ने कुछ तख़्तियों पर हर तरह की नसीहतें और हर चीज़ की तफ़सील उन को लिख कर दिया,[2] तुम उनको पूरी ताक़त से पकड़ लो, और अपनी क़ौम को हुक्म करो कि उन के अच्छे हुक्मों पर अमल करें, अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन फ़ासिकों की जगह दिखाता हूँ।[3]

وَكَتَبْنَا لَهُۥ فِى ٱلْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً
وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ
يَأْخُذُوا۟ بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُو۟رِيكُمْ دَارَ ٱلْفَٰسِقِينَ (145)

---

[1] यह अल्लाह तआला से कलाम का दूसरा मौक़ा था जिससे हज़रत मूसा को सम्मानित (सरफ़राज़) किया गया। इस से पहले जब आग लेने गये थे तो अल्लाह तआला से बातचीत हुई थी और रिसालत अता की गई थी।

[2] यानी तौरात तख़्तियों की शक्ल में अता की गयी थी, जिस में उन के लिए धर्मिक आदेश थे, कहने और करने के और शिक्षा-दीक्षा (तालीम व नसीहत) का पूरा बयान था।

[3] دار (दार) से मुराद या तो नतीजा यानी तबाही है, या इस से मुराद यह है कि ज़ालिमों के देश पर तुम्हें राज दूँगा, और इस से मुराद सीरिया देश है जिस पर उस वक़्त अमालिका का राज्य था जो अल्लाह के नाफ़रमान थे।

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ (146)

१४६. मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों से विमुख ही रखूगा जो दुनिया में तकब्बुर करते हैं, जिस का उन्हें कोई हक़ नहीं, अगर वह सभी निशानियाँ (लक्षण) देख भी लें तब भी उन पर यक़ीन नहीं करेंगे, और अगर वे सच्चे रास्ते को देख भी लें तो उसे अपना रास्ता न बनायें, और अगर वे गुमराही को देख लें तो उसको अपना रास्ता बना लें, यह इस वजह से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से ग़ाफ़िल रहे ।[1]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (147)

१४७. और वह लोग जिन्होंने हमारी आयतों और प्रलय (आख़िरत) के आने को झुठलाया, उन के सब अमल बेकार हो गये, उन्हें वही यातना दी जायेगी जो ये करते थे ।[2]

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُوَارٌ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ (148)

१४८. और मूसा की क़ौम ने उन के बाद अपने आभूषणों से एक बछड़ा बना कर देवता बना लिया जो एक ढाँचा था जिस में एक आवाज़ थी, क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उन से बात नहीं करता था और न उन को कोई रास्ता बताता था, उसको उन्होंने (देवता) बना लिया और बड़ी नाइंसाफ़ी का काम किया।[3]

---

[1] यह इस बात का सबब बताया जा रहा है कि लोग सवाब के बदले गुनाह और सच के मुक़ाबिल झूठ का रास्ता क्यों ज़्यादा अपनाते हैं? यह वजह है अल्लाह की आयतों को झुठलाने, और उन से असावधानी (ग़फ़लत) और मुँह मोड़ने का । यह हर समाज में आम तौर से पाया जाता है ।

[2] इस में अल्लाह की आयतों को झुठलाने और आख़िरत को क़ुबूल न करने वालों का अंजाम बताया गया है, चूँकि उन के आमाल की बुनियाद इंसाफ़ और सच्चाई पर नहीं, बल्कि ज़ुल्म और झूठ है, इसलिए उन के आमालनामा में गुनाह ही गुनाह होगा, जिसका अल्लाह तआला के यहाँ कोई मूल्य न होगा । हाँ, उनको इस बुराई का बदला वहाँ ज़रूर दिया जायेगा ।

[3] मूसा ﷺ जब चालीस रातों के लिए तूर पहाड़ पर गये, तो सामरी नाम के इंसान ने सोने के आभूषण जमा करके एक बछड़ा तैयार किया, जिस में उस ने जिब्रील के घोड़े के खुर की मिट्टी भी, जो उस ने संभाल कर रखी हुई थी उस में शामिल कर दी, जिस में अल्लाह तआला ने ज़िन्दगी का असर रखा था, जिसके सबब बछड़ा कुछ-कुछ बैल की आवाज़ निकालता था ।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيٓ أَيۡدِيهِمۡ وَرَأَوۡاْ أَنَّهُمۡ قَدۡ ضَلُّواْ قَالُواْ لَئِن لَّمۡ يَرۡحَمۡنَا رَبُّنَا وَيَغۡفِرۡ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ﴿149﴾

१४९. और जब लज्जित हुए[1] और मालूम हुआ कि हक़ीक़त में वे लोग भटकावे में पड़ गये तो कहने लगे कि अगर हमारा रब हम पर रहम न करे और हमारे गुनाह माफ़ न करे तो हम बिल्कुल ही नुक़सान पाने वालों में हो जायेंगे।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ غَضۡبَٰنَ أَسِفٗا قَالَ بِئۡسَمَا خَلَفۡتُمُونِي مِنۢ بَعۡدِيٓۖ أَعَجِلۡتُمۡ أَمۡرَ رَبِّكُمۡۖ وَأَلۡقَى ٱلۡأَلۡوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأۡسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُۥٓ إِلَيۡهِۚ قَالَ ٱبۡنَ أُمَّ إِنَّ ٱلۡقَوۡمَ ٱسۡتَضۡعَفُونِي وَكَادُواْ يَقۡتُلُونَنِي فَلَا تُشۡمِتۡ بِيَ ٱلۡأَعۡدَآءَ وَلَا تَجۡعَلۡنِي مَعَ ٱلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿150﴾

१५०. और जब मूसा अपनी क़ौम की ओर वापस आये, ग़ुस्सा और ग़म में डूबे हुए तो कहा कि तुम ने मेरे बाद यह बड़ी बुरी जानशीनी की है, क्या अपने रब के हुक्म से पहले ही तुम ने जल्दबाज़ी की, और जल्दी से तख़्तियां एक तरफ़ डाल दीं, और अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि हे मेरी मां से जन्मे (मांजाई)[2] इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मेरा क़त्ल कर दें तो तुम मुझ पर दुश्मनों को न हंसवाओ और मुझे इन ज़ालिमों के दर्जे में न गिनो।

قَالَ رَبِّ ٱغۡفِرۡ لِي وَلِأَخِي وَأَدۡخِلۡنَا فِي رَحۡمَتِكَۖ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ ﴿151﴾

१५१. (मूसा ने) कहा ऐ मेरे रब! मेरी ग़लतियों को माफ़ कर और मेरे भाई की भी और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल कर ले और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम करने वाला है।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ ٱلۡعِجۡلَ سَيَنَالُهُمۡ غَضَبٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَذِلَّةٞ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۚ وَكَذَٰلِكَ نَجۡزِي ٱلۡمُفۡتَرِينَ ﴿152﴾

१५२. बेशक जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की है, उन पर बहुत जल्द उन के रब की तरफ़ से ग़ुस्सा और अपमान इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही पड़ेगा, और हम झूठा इल्ज़ाम लगाने वालों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।

---

[1] سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ यह एक मुहावरा है, जिसका मतलब शर्मिन्दा होना है, यह लज्जा मूसा عليه السلام की वापसी के बाद हुई जब उन्होंने आकर इस पर बुरा-भला कहा और डांटा, जैसा सूर: ताहा में आयेगा, यहां इसे इसलिए पहले लाया गया है कि उनकी कथनी-करनी इकट्ठा हो जाये। (फ़तहुल क़दीर)

[2] हज़रत हारून और मूसा सगे भाई थे, लेकिन यहां हज़रत हारून ने «मांजाये» इसलिए कहा कि इन लफ़्ज़ों में प्रेम और कोमलता का पहलू ज़्यादा है।

१५३. और जिन लोगों ने पाप के काम किये फिर वह उनके बाद उन से क्षमा माँग लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस माफ़ी के बाद गुनाह माफ़ कर देने वाला रहीम है।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا
وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿153﴾

१५४. और जब मूसा का गुस्सा शान्त हुआ तो उन तख़्तियों को उठा लिया, उन के लेखों में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे, हिदायत और रहमत थीं।[1]

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ
وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يَرْهَبُونَ ﴿154﴾

१५५. और मूसा ने सत्तर आदमी अपनी क़ौम में से हमारे मुक़र्रा वक़्त के लिए मुंतख़ब किये, तो जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा तो (मूसा) दुआ करने लगे कि हे मेरे रब ! अगर तुझ को यह मंज़ूर होता तो इस से पहले ही इनको और मुझ को नाश कर देता, क्या तू हम में से कुछ मूर्खों के सबब सब को नाश कर देगा? यह घटना केवल तेरी तरफ़ से एक इम्तेहान है, ऐसे इम्तेहानों से जिसे तू चाहे भटकावे में डाल दे और जिसको चाहे हिदायत दे दे, तू ही हमारा संरक्षक (निगराँ) है, अब हमें माफ़ कर और रहम कर और तू माफ़ करने वालों में सब से ज़्यादा माफ़ करने वाला है।

وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا
فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاءُ مِنَّا إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ تَشَاءُ وَتَهْدِي مَنْ تَشَاءُ أَنْتَ وَلِيُّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿155﴾

१५६. और हम लोगों के नाम दुनिया में भी भलाई (पुण्य) लिख दे और आख़िरत में भी, हम तेरी तरफ़ ध्यान केन्द्रित करते हैं, (अल्लाह तआला) कहता है कि मैं अपना अज़ाब उसी पर नाज़िल करता हूँ जिस पर चाहता हूँ, और मेरी रहमत के दायरे में हर चीज़ है, तो वह रहमत उन लोगों के नाम ज़रूर लिखूँगा, जो अल्लाह से डरते हैं और ज़कात (धर्मदान) देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ
مَنْ أَشَاءُ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ
فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿156﴾

---

[1] तौरात को भी क़ुरआन की तरह, उन्हीं लोगों के लिए हिदायत और रहमत कहा गया है जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि ख़ास फ़ायेदा आसमानी किताबों का उन्हीं लोगों को होता है, दूसरे लोग तो चूँकि अपने कानों को सच सुनने से, आँखों को सच्चाई देखने से बन्द किये होते हैं, इसलिए वह रहमत से आम तौर से लाभ उठाने से महरूम ही रहते हैं।

१५७. जो लोग ऐसे अनपढ़ रसूल (दुनियावी आलिमों द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) नबी की इत्तेबा करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं,[1] वह उन को नेकी के कामों का हुक्म करते हैं और बुराई के कामों से रोकते हैं,[2] और पाक चीजों को हलाल (जायेज) बताते हैं और नापाक (अशुद्ध) चीजों को हराम (नजायेज) वताते हैं, और उन लोगों पर जो भार और गले के फंदे थे उन को दूर करते हैं, इसलिए जो लोग इस (नबी) पर ईमान लाते हैं और उनकी ताईद करते हैं और उनकी मदद करते हैं और उस नूर की इत्तेबा करते हैं जो उन के साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿157﴾

१५८. आप कह दीजिए कि हे लोगो! मैं तुम सभी की तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका मुल्क सभी आकाशों और धरती में है, उस के सिवाय कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, वही ज़िन्दगी अता करता है और वही मौत अता करता है, इसलिए अल्लाह पर और उसके रसूल अनपढ़ नबी पर यक़ीन करो जो कि अल्लाह पर और उस के हुक्म पर ईमान रखते हैं और उनकी इत्तेबा करो ताकि तुम सच्चे रास्ते पर आ जाओ।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ِۨالَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿158﴾

१५९. और मूसा की क़ौम में एक उम्मत ऐसी भी है जो हक़ के ऐतबार से ही हिदायत करती है और उस के ऐतबार से ही इंसाफ़ करती है।[3]

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿159﴾

---

[1] यह आयत भी इस बात को वाज़ेह करने के लिए क़तई दलील रखती है कि मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाये बिना आख़िरत की कामयाबी मुमकिन नहीं, और ईमान वही है जिसका तफ़सीली बयान मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने किया है, इस आयत से भी "सर्व धर्म संभव" (वहदते अदयान) की जड़ कटती है।

[2] भला वह है जिसे शरीअत ने भला कहा, और बुरा वह है जिसे शरीअत ने नाजायेज किया है।

[3] इस से मुराद वही कुछ लोग हैं जो मुसलमान हो गये थे, अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह رضي الله عنهم

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿160﴾

१६०. और हम ने उनको बारह परिवारों में बाँट कर सब की अलग-अलग उम्मत मुक़र्रर कर दिया,[1] और हम ने मूसा को हुक्म दिया जबकि उन के समुदाय (क़ौम) ने उन से पानी माँगा कि अपनी छड़ी को अमुक पत्थर पर मारो, फिर तुरन्त उस में से बारह चश्मे बह निकले, हर व्यक्ति ने अपने पानी पीने की जगह जान लिया, और हम ने उन पर बादलों की छाया की, और उन को तुरंजबीन और बटेरें पहुँचायी कि खाओ पाक मज़ेदार चीज़ें, जो कि हम ने तुम को अता की हैं और उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे।

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿161﴾

१६१. और जब उनको हुक्म दिया गया कि तुम लोग उस बस्ती में जाकर रहो और खाओ, उस से जिस जगह पर तुम रूचि रखो और मुँह से यह कहते जाना कि माफ़ी माँगते हैं और झुक-झुक कर दरवाज़े से दाख़िल होना, हम तुम्हारी ग़लतियाँ माफ़ कर देंगे, जो भलाई करेंगे उनको इस से ज़्यादा अता करेंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿162﴾

१६२. तो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक-दूसरे क़ौल से जो ख़िलाफ़ था उस क़ौल के जिस का उन्हें हुक्म दिया गया था, इस पर हम ने आकाश से एक मुसीबत भेजी, इस सबब कि वे ज़ुल्म किया करते थे।

---

[1] اسباط बहुवचन (जमा) है سبط का, और इस का मतलब पौत्र है, यहाँ अस्बात वंशों के लिए इस्तेमाल किया गया है, यानी हज़रत याक़ूब के बारह बेटों से बारह वंश धरती पर बने, हर वंश पर अल्लाह तआला ने एक-एक निरीक्षक (निगराँ) भी तैनात किया था और कह दिया था (وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا) (सूर: अल-मायेद:-१२) यहाँ अल्लाह तआला उन बारह उम्मतों के कुछ-कुछ फ़ज़ीलतों में आपसी इख़्तिलाफ़ होने के सबब उन के अलग-अलग उम्मत होने की चर्चा एहसान जताने के लिए कर रहा है।

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِى السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿163﴾

१६३. और आप उन लोगों से उस नागरिको का[1] जो समुन्दर के क़रीब बसे थे उस वक़्त की हालत पूछिये जब कि वह शनिवार के दिन के बारे में हुदूद लांघ रहे थे, जब कि उन के शनिवार के दिन उनको मछलियाँ ज़ाहिर हो-हो कर उनके सामने आतीं थीं, और जब शनिवार का दिन न होता तो उन के सामने न आती थी, हम उनका इस तरह इम्तेहान ले रहे थे, इस सबब से कि वे हुक्मों की नाफ़रमानी करते थे।

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿164﴾

१६४. और जबकि उन में से एक गुट ने यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिनको अल्लाह पूरी तरह से तबाह करने वाला है, या उन को सख़्त सज़ा देने वाला है, उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे रब के सामने तौबा करने के लिए और इसलिए कि शायद ये डर जायें।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿165﴾

१६५. तो जब वह उस को भूल गये जिस को उन को याद दिलाया जाता रहा तो हम ने उन लोगों को तो बचा लिया जो उन को बुरी बातों से रोकते थे, और उन लोगों को जो ज़ुल्म करते थे एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया, इस सबब से कि वे नाफ़रमानी करते थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿166﴾

१६६. यानी जब वह जिस काम से मना किया गया था उस में सीमा को पार कर गये, तो हम ने उनको कह दिया कि तुम अपमानित (ज़लील) बन्दर बन जाओ।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۗ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿167﴾

१६७. और वह वक़्त याद रखना चाहिए कि आप के रब ने बता दिया कि वह इन (यहूदियों) पर क़यामत तक ऐसे इंसान को मुसल्लत रखेगा जो इन लोगों को सख़्त सज़ा के ज़रिये दुख पहुँचाता रहेगा, बेशक आप का रब जल्द ही

[1] उस बस्ती के निर्धारण (तईअन) में इख़्तिलाफ़ है, कोई उस का नाम ईला, कोई तबरीया, कोई ईलिया और कोई सीरिया की कोई बस्ती जो समुद्र के क़रीब थी बतलाता है। मुफ़स्सिरों का ज़्यादातर झुकाव ईला की तरफ़ है जो मदयन और तूर पहाड़ के बीच कुलज़ुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

अज़ाब देने वाला है, और बेशक वह हक़ीक़त में बहुत माफ़ करने वाला और रहीम है।[1]

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ
وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۡ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ
وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿168﴾

१६८. और हम ने संसार में उन के (विभिन्न) गुट कर दिये, कुछ उन में नेक थे और कुछ दूसरे अख़लाक़ के थे, और हम उन को ख़ुशहाली और बदहाली के ज़रिये उनका इम्तेहान लेते रहे कि शायद वे लौट जायें।[2]

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ
يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ
سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ
يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ
الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ
لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿169﴾

१६९. फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके वारिस हुए कि किताब को उन से हासिल किया, वह इस हक़ीर दुनिया का थोड़ा-सा भी धन ले लेते हैं और कहते हैं कि हमें ज़रूर नजात मिल जायेगी, अगरचे उन के पास वैसा ही धन-दौलत आने लगे तो उसे भी ले लेंगे, क्या उन से इस किताब के इस मज़मून का वादा नहीं लिया गया कि अल्लाह की तरफ़ सच बात के सिवाय दूसरे क़ौल को सम्बन्धित न करें? और उन्होंने इस किताब में जो कुछ था उसको पढ़ लिया, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए अच्छा है जो अल्लाह का डर रखते हैं, फिर क्या तुम नहीं समझते।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ
اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿170﴾

१७०. और जो लोग किताब पर अडिग हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो ख़ुद का सुधार कर लें अज्र बेकार न करेंगे।

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿171﴾

१७१. और वह वक़्त भी याद करो जब हम ने पहाड़ को छतरी के समान उन के ऊपर लटका दिया और उन को यक़ीन हो गया कि अब उन पर गिरा, और कहा कि हम ने जो किताब तुम को दिया है उसे मज़बूती से क़ुबूल

[1] यानी अगर उन में से कोई माफ़ी माँग कर मुसलमान हो जायेगा तो वह इस ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब से बच जायेगा।

[2] इस में यहूदियों के कई गुटों में बँट जाने और उन में कुछ के नेक होने की चर्चा है, और उनकी दोनों तरह से इम्तेहान लेने का बयान है कि शायद वह अपनी करतूतों से रुक जायें और अल्लाह की तरफ़ पलट आयें।

करो और याद रखो जो हुक्म इस में है, उस से उम्मीद है कि तुम (अल्लाह से) डरने लगो ।[1]

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ
بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰي ڔ شَهِدْنَا ڔ اَنْ تَقُوْلُوْا
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ (172)

१७२. और जब आप के रब ने आदम की औलाद की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन से उन ही के बारे में वादा लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब ने जवाब दिया, क्यों नहीं, हम सभी गवाह हैं, ताकि तुम लोग क़यामत के दिन यह न कहो कि हम तो इस से सिर्फ़ अन्जान थे ।

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ (173)

१७३. या यह कहो कि सब से पहले शिर्क तो हमारे बुज़ुर्गों ने किया और हम उन के बाद उन के वंश में हुए, तो क्या उन ग़लत लोगों के कुकर्मों पर तू हमें तबाही में झोंक देगा ।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (174)

१७४. और हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान कर देते हैं ताकि वे वापस आ जायें।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا
فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ
مِنَ الْغٰوِيْنَ (175)

१७५. और उन लोगों को उस व्यक्ति की हालत पढ़ कर सुनाईये कि जिस को हम ने अपनी निशानियाँ अता कीं, फिर वह उन से बिल्कुल निकल गया, फिर शैतान उस के पीछे लग गया, इस तरह वह भटके हुए लोगों में शामिल हो गया ।[2]

---

[1] यह उस वक़्त का वाक़ेआ है जब हज़रत मूसा उन के पास तौरात लाये और उसके हुक्म उनको सुनाये, तो उन्होंने अपने अख़लाक़ के ऐतबार से उन के ऊपर अमल करना क़ुबूल न किया और नाफ़रमानी की, जिस के सबब अल्लाह तआला ने उन के सिर पर पहाड़ ला खड़ा किया कि तुम पर गिरा कर कुचल दिया जायेगा, जिस से डर कर उन्होंने वादा किया कि तौरात के हिसाब से काम करेंगे ।

[2] मुफ़स्सिरों ने इसे एक ख़ास इंसान से सम्बन्धित माना है, जिसे किताबे इलाही का इल्म हासिल था, लेकिन वह संसार और शैतान का पैरोकार बन कर गुमराह हो गया, लेकिन उस के ख़ास करने में कोई सुबूत नहीं, इसलिए उस के तईअन की कोई ज़रूरत भी नहीं है ।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَٰهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُۥٓ أَخْلَدَ إِلَى ٱلْأَرْضِ وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ ۚ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ ٱلْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَث ۚ ذَّٰلِكَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا ۚ فَٱقْصُصِ ٱلْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿176﴾

१७६. और अगर हम चाहते तो उस को इन निशानियों के सबब ऊँचे पद पर आसीन कर देते, लेकिन वह तो दुनिया के माया मोह में पड़ गया और अपनी आरज़ूओं की पैरवी करने लगा तो उस की हालत कुत्ते की तरह हो गयी कि अगर तुम उस पर हमला करो तब भी हाँफे या उसको छोड़ दो तब भी हाँफे,[1] यही हालत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, अत: आप इस हालत को बयान कर दीजिए, शायद वह लोग कुछ सोचें।

سَآءَ مَثَلًا ٱلْقَوْمُ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا۟ يَظْلِمُونَ ﴿177﴾

१७७. उन लोगों की हालत भी बुरी हालत है जो हमारी आयतों को झूठ मानते हैं, और अपना नुक़सान करते हैं।

مَن يَهْدِ ٱللَّهُ فَهُوَ ٱلْمُهْتَدِى ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ﴿178﴾

१७८. जिस को अल्लाह तआला ख़ुद हिदायत देता है वही हिदायत पर होता है, और जिन्हें अल्लाह गुमराह कर दे वही घाटे में हैं।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ ءَاذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَآ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ كَٱلْأَنْعَٰمِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْغَٰفِلُونَ ﴿179﴾

१७९. और हम ने ऐसे बहुत से जिन्न और इंसान जहन्नम के लिए पैदा किये हैं, जिन के दिल ऐसे हैं जिन से नहीं समझते, और जिन की आँखें ऐसी हैं जिन से नहीं देखते, और जिन के कान ऐसे हैं जिन से नहीं सुनते। यह लोग चौपाये (पशु) की तरह हैं, बल्कि उन से भी ज़्यादा भटके हुए हैं,[2] यही लोग ग़ाफ़िल हैं।

---

[1] نَهْثٌ थकान या प्यास के सबब ज़बान निकालने को कहते हैं, कुत्ते की यही आदत होती है कि उसे डांटो-डपटो या उसकी हालत पर छोड़ दो, दोनों हालतों में यह भौंकने से नहीं रुकता, इसी तरह इसकी यह भी आदत है कि वह पेट भर खाये हो या भूखा हो, तंदुरूस्त हो या रोगी, थका हुआ हो या चुस्त, हर हालत में ज़बान निकाले हाँफता रहता है, यही हालत ऐसे इंसान की है जिसे नसीहत दो या न दो, उसकी हालत एक ही रहेगी और दुनियावी धन-दौलत के लिए लार टपकती रहेगी।

[2] यानी दिल, आँख और कान अल्लाह तआला ने इसलिए अता की हैं कि इंसान इन से फ़ायेदा उठाते हुए अपने रब को समझे, उसकी निशानियों को देखे और सच बात को ध्यानपूर्वक सुने, लेकिन जो इंसान इन चीज़ों से यह काम नहीं लेता, वह उन से फ़ायेदामंद न होने के सबब जानवरों की तरह है, बल्कि उन से भी ज़्यादा भटका हुआ है, इसलिए कि जानवर फिर भी कुछ अपने फ़ायदे और नुक़सान की समझ रखते हैं, क्योंकि वे फ़ायदेमंद चीज़ों से फ़ायेदा

१८०. और अच्छे नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो, और ऐसे लोगों से सम्बन्ध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं, उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी।

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (180)

१८१. और हमारी मख़लूक़ में एक उम्मत ऐसी भी है जो हक़ के साथ हिदायत करते हैं और उसी के मुताबिक़ इंसाफ़ करते हैं।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ (181)

१८२. और जो लोग हमारी आयतों (चिन्हों) को झुठलाते हैं हम उनको धीरे-धीरे (पकड़ में) ऐसे लिये जा रहे हैं कि उन को पता भी नही।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ (182)

१८३. और उन को मौक़ा देता हूँ, बेशक मेरा तरीक़ा बड़ा मज़बूत है।

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ (183)

१८४. क्या उन लोगों ने इस बात पर ख़्याल नहीं किया कि उन के साथी को तनिक भी जुनून नहीं, वह तो सिर्फ़ एक साफ़ डराने वाले हैं।[1]

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ (184)

१८५. और क्या उन लोगों ने ख़्याल नहीं किया आकाशों और धरती के लोक में और दूसरी चीज़ों में, जो अल्लाह ने पैदा की हैं और इस बात में कि मुमकिन है कि उनकी मौत क़रीब ही आ पहुँची हो, फिर उस (क़ुरआन) के बाद कौन सी-बात पर ये लोग ईमान लायेंगे?[2]

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ (185)

उठाते हैं और नुक़सानदह चीज़ों से दूर रहते हैं, लेकिन अल्लाह तआला की हिदायत से गुमराह इंसान के अन्दर तो यह समझ भी नहीं होती कि उस के लिए फ़ायदेमंद चीज़ें कौन-सी हैं और नुक़सानदह चीज़ें कौन-सी, इसीलिए अगले कलिमे में उन्हें वेख़बर कहा गया है।

[1] صاحب (साहिब) से मुराद आख़िरी रसूल मुहम्मद ﷺ हैं जिनको मुश्रिक कभी जादूगर कभी पागल (نعوذ بالله) कहते थे, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह तुम्हारे ख़्याल न करने का नतीजा है, वह तो हमारा पैग़म्बर है, जो हमारा हुक्म पहुँचाने वाला और उन से बेख़बर रहने वालों और नाफ़रमानी करने वालों को डराने वाला है।

[2] हदीस से यहाँ मुराद क़ुरआन मजीद है यानी नबी ﷺ के बाख़बर करने और ख़ुशख़बरी देने और क़ुरआन करीम के बाद भी अगर यह ईमान न लायें तो इन से बढ़कर उनको डराने वाली चीज़

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿186﴾

१८६. जिसको अल्लाह (तआला) भटका दे उसे कोई रास्ता पर नहीं ला सकता, और अल्लाह (तआला) उन को उन की गुमराही में भटकते छोड़ देता है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿187﴾

१८७. यह लोग आप से क़यामत के[1] बारे में सवाल करते हैं कि वह कब आयेगी। आप कह दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास ही है, इस को इस के वक़्त पर सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई दूसरा ज़ाहिर न करेगा, वह आकाशों और धरती की बहुत बड़ी (घटना) होगी, वह तुम पर अचानक आ पड़ेगी, वह आप से इस तरह पूछते हैं जैसाकि आप उस की खोज कर चुके हैं। आप कह दीजिए कि उस का इल्म ख़ास तौर से अल्लाह ही के पास है लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚۖ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿188﴾

१८८. आप कह दीजिए कि ख़ुद मैं अपनी ज़ात ख़ास के लिए किसी फ़ायदे का हक़ नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, लेकिन इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत से फ़ायदे हासिल कर लेता, और कोई नुक़सान मुझे न पहुँचता,[2] मैं तो सिर्फ़ डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

दूसरी क्या होगी जो अल्लाह की तरफ़ से उतरे और फिर यह उस पर ईमान लायें?

[1] ساعة (साअ:) का मतलब है (क्षण या पल) क़यामत को साअ: इसलिए कहा गया है कि यह अचानक इस तरह आ जायेगी कि यह सारी दुनिया एक पल में तहस-नहस हो जायेगी या हिसाब की जल्दी के बुनियाद पर क़ियामत के वक़्त को साअत से तुलना की गयी है।

[2] यह आयत इस बात के लिए कितनी वाज़ेह है कि नबी ﷺ ग़ैब जानने वाले नहीं, ग़ैब जानने वाला केवल अल्लाह तआला ख़ुद है, लेकिन ज़ुल्म और अज्ञान की इन्तिहा है कि इस के बावजूद दीन में बिदअत वाले आप ﷺ को ग़ैब जानने वाले साबित करने की नाकाम कोशिश करते हैं।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿189﴾

१८९. वह (अल्लाह तआला) ऐसा है कि जिस ने तुम्हें सिर्फ़ एक जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया,[1] ताकि वह अपने उस जोड़े से सुकून हासिल करे,[2] फिर पति ने पत्नी से नज़दीकी की, तो उसे गर्भ रह गया, हल्का-सा, फिर वह उसको लेकर चलती फिरती रही, जब वह भार को महसूस करने लगी, तो पति-पत्नी दोनों अल्लाह से जो उनका मालिक है दुआ करने लगे कि अगर तूने हम को सहीह सालिम औलाद अता कर दी तो हम बहुत शुक्र अदा करेंगे।[3]

فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا ۚ فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿190﴾

१९०. तो जब अल्लाह ने दोनों को सहीह सालिम (औलाद) अता किया तो अल्लाह की अता में वह दोनों अल्लाह का साझी ठहराने लगे,[4] इसलिए अल्लाह पाक है उनके शिर्क करने से।

---

[1] इस से मुराद हज़रत हव्वा हैं, जो हज़रत आदम की बीवी बनीं, उनकी पैदाईश हज़रत आदम से हुई, जिस तरह से مِنها के सर्वनाम (ज़मीर) से, जो एकवचन ज़ाहिर करता है, वाज़ेह है। (तफ़सील के लिए देखिए सूरः निसा, आयत नं॰१ की तफ़सीर)

[2] यानी एक-दूसरे से सुख और सुकून हासिल करे, इसलिए कि एक जिन्स अपने ही जिन्स से ज़्यादा करीब और मुहब्बत कर सकती है, जो सुकून हासिल करने के लिए ज़रूरी है, नज़दीकी के बिना यह मुमकिन ही नही है।

यानी अल्लाह तआला ने मर्द और औरत दोनों में एक-दूसरे के लिए जो खिंचाव और लगाव रखा है, फ़ितरत की यह देन वह जोड़ा बन कर पूरा करते हैं, एक-दूसरे से नज़दीकी और मुहब्बत हासिल करते हैं, इसलिए यह सच है कि जो आपसी मुहब्बत पति और पत्नी के बीच होती है, वह दुनिया के किसी दूसरे रिश्ते में नहीं होती।

[3] भारी हो जाने से मुराद, जब बच्चा गर्भ में बड़ा हो जाता है, तो ज्यों-ज्यों पैदाईश का वक़्त करीब आता जाता है, माँ-बाप के दिल में डर और शक पैदा होता जाता है। (ख़ास तौर से जब औरत को औरत रोग हो) तो इंसान की फ़ितरत है कि डर के सबब अल्लाह की तरफ़ आकर्षित होते है, इसलिए वे दोनों अल्लाह से दुआ करते हैं और शुक्र अदा करने का वादा करते हैं।

[4] साझीदार बना देने से मुराद या तो बच्चे का नाम ऐसा रखना है, जैसे इमामबख़्श, पीरदत्ता, अब्दशम्स बन्दः अली वग़ैरह, जिस से यह वाज़ेह होता है कि बच्चा फ़लाँ पीर या साधू के (نعوذ بالله) नज़रे करम का नतीजा है, या अपने इस यक़ीन को ज़ाहिर करे कि हम तो फ़लाँ पीर या साधू या फ़लाँ क़ब्र पर गये थे जिसके नतीजे से बच्चा पैदा हुआ, यह सभी हालतें अल्लाह का साझीदार बनाने की हैं, जो बदनसीबी से मुसलमानों में भी आम तौर से पाई जाती है।

أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿191﴾

१९१. क्या ऐसों को साझीदार ठहराते हैं जो किसी चीज़ को न बना सकें, (बल्कि) ख़ुद उन को ही बनाया गया हो।

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿192﴾

१९२. और वह उन को किसी तरह की मदद नहीं दे सकते, और वे ख़ुद अपनी मदद नहीं कर सकते।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿193﴾

१९३. और अगर तुम कोई बात बताने को उन को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें, तुम्हारे लगाव से दोनों बातें बराबर हैं चाहे तुम उनको पुकारो या चुप रहो।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۖ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿194﴾

१९४. हक़ीक़त में तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (इबादत करते) हो वह भी तुम ही जैसे बन्दे हैं, तो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि वह तुम्हारा कहना कर दें, अगर तुम सच्चे हो।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظِرُونِ ﴿195﴾

१९५. क्या उन के पैर हैं जिन से वे चलते हों, या उन के हाथ हैं जिस से किसी चीज़ को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिन से देखते हों, या उन के कान हैं जिन से वे सुनते हैं। आप कह दीजिए कि तुम अपने सभी साझीदारों को बुला लो, फिर मुझे (नुक़सान पहुँचाने की) उपाय करो, फिर मुझे तनिक मौक़ा न दो।

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿196﴾

१९६. बेशक मेरा सहायक (वली) अल्लाह ही है, जिस ने यह किताब (पाक क़ुरआन) उतारा, और वह नेक लोगों की मदद करता है।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿197﴾

१९७. और तुम जिन लोगों को अल्लाह को छोड़ कर पुकारते (इबादत करते) हो वह तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वह अपनी मदद कर सकते हैं।[1]

[1] जो अपनी मदद आप करने के क़ाबिल न हो, वे भला दूसरों की मदद क्या करेंगे।

१९८. और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो उस को न सुनें, और उन को आप देखते हैं कि वह आप को देख रहे हैं और वह कुछ भी नहीं देखते।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ (198)

१९९. आप माफ़ी का रास्ता अपनायें, भलाई के काम की तालीम दें और जाहिलों से अलग रहें।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ (199)

२००. और अगर आप को कोई शक शैतान की ओर से आने लगे तो अल्लाह की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (200)

२०१. बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उनको कोई शक शैतान की तरफ़ से आ जाता है तो वह याद में लग जाते हैं, इसलिए अचानक उनकी आँखें खुल जाती हैं।[1]

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَيْفٌ مِنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ (201)

२०२. और जो शैतानों के पैरो हैं वह उनको मुसीबत में खींचे ले जाते है फिर वे नहीं रुकते।

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ (202)

२०३. और जब आप कोई मोजिज़ा उन के सामने पेश नहीं करते तो वह लोग कहते हैं कि आप यह मोजिज़ा क्यों न लाये। (आप) फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी इत्तेबा करता हूँ जो मुझ पर मेरे रब की तरफ़ से आदेश भेजा गया है, यह मानो तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (203)

२०४. और जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो और ख़ामोश रहो, उम्मीद है

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (204)

---

[1] इस में अल्लाह से डर रखने वालों के बारे में बताया गया है कि वे शैतान से होशियार रहते हैं। طائف या طيف उस ज़ेहनी ख़्यालों को कहते हैं जो दिल में आये या ख़्वाब में आये, यहाँ उसे शैतान के ज़रिये डाला गया शक के लिए इस्तेमाल हुआ है, क्योंकि शैतान के ज़रिये शक भी ज़ेहनी ख़्यालों में ही पैदा होते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿205﴾

कि तुम पर रहमत हो ।[1]

२०५. और (हे इंसान) ! अपने मन में आजिज़ी और डर कर अपने रब को याद करता रह, सुबह और शाम आवाज़ को कम कर के और ग़ाफ़िलों में न होना ।

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ﴿206﴾

२०६. बेशक जो लोग तेरे रब के क़रीब हैं वे उस की इबादत से घमंड नहीं करते, और उस की पाकीज़गी बयान करते और उस को सज्दा करते हैं ।

سُورَةُ الْأَنْفَالِ

सूरतुल अंफाल-८

सूरः अंफाल मदीना में उतरी और इस की पचहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

---

[1] यहां काफ़िरों को कहा जा रहा है जो क़ुरआन के पढ़ते वक़्त शोर करते थे और अपने साथियों से कहते थे :

﴿لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا﴾

"यह क़ुरआन मत सुनो और शोर करो ।" (सूरः हा॰ मीम॰ सज्दा-२६)

उन से कहा जा रहा है कि इसके बजाय अगर ग़ौर से सुनो और चुप रहो, तो शायद अल्लाह तआला तुम्हें हिदायत अता कर दे, इस तरह तुम अल्लाह की रहमत के हक़दार बन जाओ ।

कुछ आलिम इसे आम तौर से लेते हैं यानी जब भी क़ुरआन पढ़ा जाये चाहे नमाज़ हो या नमाज़ न हो सब को चुप हो कर सुनने का आदेश है, इस आम हुक्म से भाव निकाल कर ज़ोर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़्तदी (नमाज़ में इमाम के सिवाय सभी नमाज़ियों को कहते हैं) के सूरः फ़ातिहा पढ़ने को भी क़ुरआन के इस हुक्म के ख़िलाफ़ मानते हैं, जब कि ऊंची आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा पढ़नें के लिए हुक्म नबी ﷺ से सहीह हदीसों से साबित है, जैसाकि इस के मक्की होने से भी साबित होता है, लेकिन अगर इसे आम तौर से मान भी लिया जाये तब भी इस आम से मुक़्तदियों को नबी ﷺ ने निकाल दिया, और इस तरह इस आयत के आम होने के बाद भी ऊंची आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़्तदियों को सूरः फ़ातिहा ज़रूर पढ़नी होगी, क्योंकि क़ुरआन के इस आम हुक्म से मुक़्तदियों की छूट के लिए सहीह हदीस और ठोस हदीसों से साबित होता है ।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ①

१. ये लोग आप से जंग में मिले माल के बारे में पूछते हैं,[1] आप कह दीजिए कि जंग से हासिल माल अल्लाह के हैं और रसूल के हैं, इसलिए तुम अल्लाह से डरो और अपने आपसी रिश्तों को सुधारो और अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्म की इताअत करो अगर तुम ईमानवाले हो।[2]

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ②

२ बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह (तआला) का बयान होता है तो उन के दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती हैं तो वे आयतें उन के ईमान को और ज़्यादा कर देती हैं और वह लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं।[3]

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ③

३. जो कि नमाज़ पाबन्दी से पढ़ते हैं और हम ने जो कुछ उनको दिया है वे उस में से ख़र्च करते हैं।

اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④

४ सच्चे ईमानवाले यही लोग हैं, उन के लिए बड़े पद हैं उन के रब के पास और मग़फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी है।

---

[1] اَنفَال कलिमा نَفل कलिमा का बहुवचन (जमा) है, जिसका मतलब है ज़्यादा, ये उस माले ग़नीमत को कहा जाता है जो काफ़िरों के साथ जंग में हाथ लगे, इसे अंफ़ाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उन चीज़ों में से है जो पहले के उम्मतों के लिए हराम थी, यानी यह मुसलमानों के लिए एक ज़ाइद चीज़ जायेज़ की गयी है या इसलिए कि ये जिहाद के बदला से (जो आख़िरत में मिलेगा) एक अधिक चीज़ है, जो कई बार दुनिया ही में मिल जाती है।

[2] इस का मतलब यह हुआ कि बयान किये तीनों बातों के अनुसार अमल किये बिना ईमान पूरा नहीं। इस से अल्लाह का डर (तक़वा), आपस में सम्बन्धों का सुधार, और अल्लाह और अल्लाह के रसूल ﷺ के हुक्म की पैरवी की फ़ज़ीलत को वाज़ेह किया गया है, ख़ास तौर से जंग में मिले माल के बँटवारे में इन तीनों बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है।

[3] इन आयतों में ईमानवालों के चार अवसाफ़ बताये गये हैं। १. यह अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुक्म की पैरवी करते हैं, न कि केवल अल्लाह का या क़ुरआन का, २. अल्लाह का बयान सुन कर उसकी बड़ाई और अज़मत के असर से दिल काँप उठते हैं, ३. क़ुरआन पढ़ने से उन के ईमान में बढ़ोत्तरी होती है, ४. वे अपने रब पर भरोसा करते हैं, तवक्कुल का मतलब है कि ज़ाहिरी असबाबों को अपनाने के बावजूद अल्लाह पर भरोसा करते हैं, यानी ज़ाहिरी असबाब से मुँह नहीं मोड़ते क्योंकि उनको अपनाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ﴿5﴾

५. जैसा कि आप के रब ने आप के घर से सच के साथ आप को निकाला, और मुसलमानों का एक गुट इस को भारी समझता था।

يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿6﴾

६. वह वाजेह हो जाने के बाद सच के बारे में आप से झगड़ा कर रहे थे जैसेकि वह मौत की ओर हांके जा रहे हों और (उसे) देख रहे हों।

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿7﴾

७. और तुम लोग उस वक़्त को याद करो कि जब अल्लाह तुम से उन दो गुटों में से एक का वादा करता था कि वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा,[1] और तुम इस उम्मीद में थे कि बिना हथियारों वाला गुट तुम्हारे हाथ आ जाये, और अल्लाह तआला को क़ुबूल था कि अपने हुक्म से सच का सच होना साबित कर दे और उन काफ़िरों की जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿8﴾

८. ताकि सच का सच होना और झूठ का झूठ होना साबित कर दे, चाहे ये मुजरिम लोग पसन्द न करें।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿9﴾

९. उस वक़्त को याद करो जब कि तुम अपने रब से दुआ कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूंगा जो लगातार चले आयेंगे।[2]

---

[1] यानी या तो तिजारिती क़ाफ़िला तुम्हें मिल जायेगा, जिस से तुम्हें लड़ाई के बिना बहुत ज़्यादा माल-सामग्री मिल जायेगी, दूसरी हालत में क़ुरैश की सेना से तुम्हारा मुक़ाबिला होगा और तुम्हारी जीत होगी और जंग से मिले माल-सामग्री मिलेगी।

[2] इस जंग में मुसलमानों की तादाद ३१३ थी, जब कि काफ़िर उन के तीन गुने (यानी) लगभग एक हज़ार थे, फिर मुसलमान निहत्थे थे और बिना हथियार के थे, जबकि काफ़िरों के पास असलहों की ज़्यादती थी। इन हालात में मुसलमानों को सहारा केवल अल्लाह ही की ताक़त का था, जिस से वे रो रो कर विनती कर रहे थे, ख़ुद नबी करीम ﷺ एक ख़ैमें में आग्रहपूर्ण (गिरिया व ज़ारी) में लीन थे। (सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी) इसलिए अल्लाह तआला ने दुआयें क़ुबूल कीं और एक हज़ार फ़रिश्ते एक-दूसरे के पीछे लगातार मुसलमानों की मदद के लिए आ गये।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿10﴾

१०. और अल्लाह (तआला) ने यह मदद सिर्फ इस सबब से की कि ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिलों को सुकून हो जाये, और जीत सिर्फ अल्लाह की तरफ़ से है,[1] बेशक अल्लाह बहुत ज़्यादा ताकत वाला और हिक्मत वाला है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿11﴾

११. उस वक़्त को याद करो, जबकि (अल्लाह तआला) तुम पर ऊंघ तारी कर रहा था, अपनी ओर से सुकून अता करने के लिए[2] और तुम पर आकाश से पानी बरसा रहा था कि इस पानी के ज़रिये तुम को पाक कर दे और तुम से शैतानी शंकाओं को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे पाँव जमा दे।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓىِٕكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿12﴾

१२. उस वक़्त को याद करो, जब कि आप का रब फ़रिश्तों को हुक्म दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ। मैं अभी काफ़िरों के दिलों में डर डालता हूँ। इसलिए तुम गर्दनों पर मारो और उन के जोड़-जोड़ पर चोट लगाओ।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿13﴾

१३. यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह की और उस के रसूल की मुख़ालफ़त की और जो अल्लाह की और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं तो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है।

---

[1] यानी फ़रिश्तों का उतारना तो सिर्फ ख़ुशख़बरी और तुम्हारे दिलों के सुकून के लिए था, बल्कि असल मदद तो अल्लाह की तरफ़ से थी, जो फ़रिश्तों के बिना भी तुम्हारी मदद कर सकता था, फिर भी इस से यह समझना भी जायेज़ नहीं कि फ़रिश्तों ने जंग में हिस्सा नहीं लिया। हदीसों से मालूम होता है कि जंग में फ़रिश्तों ने हिस्सा लिया और कई काफ़िरों का क़त्ल भी किया, (देखिए सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम किताबुल मग़ाज़ी व फ़ज़ायेल अस्सहाबा)

[2] ओहुद की जंग की तरह बद्र के जंग में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर ऊंघ तारी कर दिया, जिस से उन के दिलों के भार हल्के हो गये और सुकून व आराम की एक ख़ास हालत उन पर असरअंदाज़ हो गयी।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿14﴾

१४. तो यह सजा का मजा चखो और ध्यान रहे कि काफ़िरों के लिए आग का अज़ाब मुक़र्रर ही है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿15﴾

१५. हे ईमानवालो! जब तुम काफ़िरों से मुठभेड़ करो तो उन से पीठ मत फेरना।[1]

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿16﴾

१६. और जो शख़्स उन से उस मौक़ा पर पीठ फेरेगा, लेकिन अगर कोई लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो या जो अपने गुट की तरफ़ पनाह लेने आता हो, (वह अलग है) बाक़ी दूसरा जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के ग़ज़ब को पायेगा, और उसका ठिकाना नरक होगा और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿17﴾

१७. तो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें क़त्ल किया,[2] और आप ने (धूल की मुट्ठी) नहीं फेंकी, लेकिन अल्लाह तआला ने फेंकी,[3] और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ़ से उनकी कोशिश का बहुत ज़्यादा अज्र अता करे[4] बेशक अल्लाह तआला ज़्यादा सुनने

---

[1] زحفا (ज़हफ़न) कलिमा का मतलब है एक-दूसरे के सामने होना और संघर्ष करना, यानी मुसलमान और काफ़िर जब सामने हो कर लाम बन्दी करें तो पीठ फेर कर भागने का हुक्म नहीं है।

[2] यानी बद्र की लड़ाई की यह सारी तफ़सील तुम्हारे सामने पेश कर दिया गया है और जिस-जिस तरह से अल्लाह ने तुम्हारी मदद की है, उसकी वज़ाहत के बाद तुम यह न समझ लेना कि काफ़िरों का क़त्ल यह तुम्हारा कारनामा है। नहीं, बल्कि यह अल्लाह ही की मदद का नतीजा है, जिस के सबब तुम्हें यह ताक़त मिली, इसलिए हक़ीक़त में उनका क़त्ल करने वाला अल्लाह तआला है।

[3] बद्र की लड़ाई में नबी ﷺ ने कंकरियों को मुट्ठी में भर कर काफ़िरों की तरफ़ फेंका था, जिसे एक तो अल्लाह तआला ने काफ़िरों के मुंह और आंखों तक पहुंचा दिया। दूसरे उस में यह गुण पैदा कर दिया कि जिस के सबब उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता था, यह मोजिज़ा भी, जो उस वक़्त अल्लाह की मदद से ज़ाहिर हुआ, मुसलमानों की कामयाबी में बहुत ज़्यादा मददगार साबित हुआ।

[4] بلاء (बलाअन) यहां एहसान के मतलब में इस्तेमाल हुआ है, यानी अल्लाह का यह समर्थन (ताईद) व रहमत अल्लाह का एहसान है, जो ईमानवालों पर हुआ।

वाला ज़्यादा जानने वाला है।

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ⑱

१८. (एक बात तो) यह हुई (दूसरी बात है) कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की चाल को नाकाम करना था।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑲

१९. अगर तुम लोग फ़ैसला चाहते हो तो वह फ़ैसला तुम्हारे सामने है, और अगर रुक जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है, और अगर तुम फिर भी वही काम करोगे तो हम भी फिर वही काम करेंगे और तुम्हारा समुदाय तुम्हारे तनिक काम नहीं आयेगा, चाहे कितनी ज़्यादा तादाद हो, तथा हक़ीक़त बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ⑳

२०. हे ईमानवालो! अल्लाह का और उस के रसूल (संदेशवाहक) का कहना मानो और उस (का कहना मानने) से मुंह न फेरो सुनते जानते हुए।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ㉑

२१. और तुम उन लोगों की तरह न होना जो दावा तो करते हैं कि हम ने सुन लिया, हालांकि वह सुनते (सुनाते) कुछ नहीं।[1]

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ㉒

२२. बेशक बहुत बुरी मख़लूक़ अल्लाह तआला के क़रीब वे लोग हैं जो बहरे हैं, गूंगे हैं जो कि तनिक भी नहीं समझते।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ㉓

२३. और अगर अल्लाह (तआला) उन में कोई अच्छाई देखता तो उन को सुनने की ताक़त अता करता, और अगर उन को अब सुना दे तो ज़रूर मुंह फेरेंगे, विमुख होते हुए।[2]

[1] यानी सुन लेने के बावजूद उस के ऐतबार से अमल न करना यह काफ़िरों का तरीक़ा है, तुम इस तरीक़ा से बचो। अगली ही आयत में ऐसे लोगों को गूंगा, बहरा, अनपढ़ और नासमझ बताया गया है।

[2] पहले सुनने से मुराद लाभकारी सुनना है, इस दूसरे सुनने से प्राकृतिक रूप (फ़ितरी तौर) से सुनने की ताक़त है। यानी अगर अल्लाह तआला उन्हें सच बात सुना भी देता, तो चूंकि उन के

२४. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह और रसूल के हुक्मों की पैरवी करो, जब कि रसूल तुम को तुम्हारी जिन्दगी बख़्श विषय की तरफ़ बुलाते हों, और याद रखो कि अल्लाह तआला इंसान के और उस के दिल के बीच आड़ बन जाता है, और बेशक तुम्हें अल्लाह ही के पास जमा होना है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱسْتَجِيبُوا۟ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ ٱلْمَرْءِ وَقَلْبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿24﴾

२५. और तुम ऐसी मुसीबत से बचो कि जो ख़ास तौर से उन ही लोगों पर नाज़िल न होगी जो तुम में से उन गुनाहों के दोषी हैं,[1] और यह जान रखो कि अल्लाह तआला बहुत सख़्त सज़ा देने वाला है।

وَٱتَّقُوا۟ فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنكُمْ خَآصَّةً ۖ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿25﴾

२६. और उस हालत को याद करो, जब कि तुम धरती पर थोड़े थे, कमज़ोर माने जाते थे, इस डर में रहते थे कि तुम को लोग उचक न लें, तो अल्लाह ने तुम्हें रहने के लिए जगह दी और तुम को अपनी मदद से ताक़त अता की और तुम को पकीज़ा रिज़्क अता किये, ताकि तुम शुक्र करो।[2]

وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِى ٱلْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ ٱلنَّاسُ فَـَٔاوَىٰكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِۦ وَرَزَقَكُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿26﴾

२७. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह और रसूल (के हक़) का हनन (ख़्यानत) न करो और अपनी सुरक्षित चीज़ों में विश्वासघात (ख़्यानत) न करो,[3] और तुम जानते हो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَخُونُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ وَتَخُونُوٓا۟ أَمَٰنَٰتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿27﴾

दिल में सच जानने की खोज ही नहीं, इसलिए वे लगातार इस से मुँह फेरते रहेंगे।

[1] इस से मुराद या तो बन्दों का एक-दूसरे पर हक़ है, जो बिना किसी तरह के आम और ख़ास की छूट के ज़ुल्म करते हैं या वे आम अज़ाब हैं, जो बारिश की अधिकता, या बाढ़ आदि धरती और आकाश की मुसीबत की शक्ल में नाज़िल होते हैं और सवाब व अज़ाब दोनों के करने वाले बराबर से असरअंदाज होते हैं, या कुछ हदीसों में सवाब के कामों का हुक्म देना और गुनाह के कामों से रोकने को छोड़ देने से जिन अज़ाब की चेतावनी (तंबीह) का बयान किया गया है, वह मुराद है।

[2] इस से मक्की ज़िन्दगी की कठिनाईयों और डर का बयान और उस के बावजूद मदीने की ज़िन्दगी में अमनो अमान और ख़ुशहाली जो अल्लाह की रहमत से हासिल हुई उसका बयान है।

[3] अल्लाह तआला और रसूल ﷺ के हक़ों में ख़्यानत का मतलब यह है कि प्रत्यक्ष रूप (ज़ाहिरी

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿28﴾

२८. और तुम इस बात को जान रखो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी औलाद एक इम्तेहान के लिए हैं,[1] (और इस बात को भी जान रखो) कि अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा बदला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿29﴾

२९. हे ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह (तआला) तुम्हें एक फ़ैसले की चीज अता करेगा, और तुम से तुम्हारे गुनाह दूर करेगा और तुम को माफ़ कर देगा और अल्लाह (तआला) बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۗ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿30﴾

३०. और उस घटना (वाक़ेआ) का भी जिक्र कीजिए, जबकि काफ़िर लोग आप के बारे में साजिश कर रहे थे कि आप को बंदी बना लें या आप को क़त्ल कर दें या आप को देश निकाला दे दें,[2] और वह अपनी साजिश कर रहे थे और अल्लाह तआला अपनी योजना बना रहा था और अल्लाह तआला सब से बेहतर योजना बनाने वाला है।

तौर) से तो अल्लाह और रसूल ﷺ के आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) बन कर रहें, अकेले में उस के खिलाफ़ काम करें। विश्वासघात यह भी है कि किसी जरूरी काम को छोड़ दे और निषेधित काम को करे। और (وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ) का मतलब है कि एक इंसान दूसरे इंसान के पास कोई चीज हिफ़ाजत के इरादे से रखे, उस में विश्वासघात न करे।

[1] माल और औलाद की मुहब्बत ही किसी इंसान को आम तौर से विश्वासघात (ख़्यानत) करने पर और अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म तोड़ने पर मजबूर करता है, इसलिए इनको मुसीबत (परीक्षा) कहा गया है, यानी इसके जरिये इंसान का इम्तेहान लिया जाता है कि उनकी मुहब्बत के साथ यक़ीन और हुक्म की पैरवी की माँग को पूरा करता है या नहीं ? अगर वह पूरा करता है, तो समझ लो वह अपने इम्तेहान में कामयाब हो गया, उसकी दूसरी शक्ल में नाकाम। इस हालत में यह माल और औलाद उसके लिए अल्लाह के अजाब को भोगने का सबब बन जायेंगे।

[2] यह उस साजिश का बयान है जो मक्का के मूर्तिपूजक नेताओं ने एक रात दारुन नदवा में तैयार किया था, आख़िर में यह तय किया गया कि हर जाति के युवकों को आप ﷺ के क़त्ल करने के लिए तैनात किया जाये, ताकि किसी एक को क़त्ल के बदले में क़त्ल न किया जा सके बल्कि धन देकर जान छूट जाये।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿31﴾

३१. और जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जातीं हैं तो कहते हैं कि हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इसकी तरह कह दें, यह तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ पूर्वजों की बिना सुबूत की बातें हैं।

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿32﴾

३२. और जबकि उन लोगों ने कहा, हे अल्लाह! अगर यह क़ुरआन हक़ीक़त में आप की तरफ़ से है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा, या हम पर कोई तकलीफ़ देने वाला आज़ाब नाज़िल कर दे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿33﴾

३३. और अल्लाह (तआला) ऐसा न करेगा कि उन में आप के होते हुए उन को अज़ाब दे, और अल्लाह (तआला) उनको अज़ाब न देगा[1] इस हालत में कि यह तौबा भी करते हों।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿34﴾

३४. और उन में क्या बात है कि उन को अल्लाह (तआला) सज़ा न दे, बावजूद कि वे लोगों को मस्जिदे हराम से रोकते हैं, जबकि वह लोग इस मस्जिद के संरक्षक (निगरां) नहीं, उसके संरक्षक अल्लाह के फ़रमांबरदारों के सिवाय कोई नहीं, लेकिन उन में ज़्यादातर लोग इल्म नहीं रखते।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿35﴾

३५. और उन की नमाज़ काअबा के क़रीब सिर्फ़ यह थी, सीटियां बजाना और तालियां बजाना[2] तो अपने कुफ़्र के सबब इस अज़ाब का मज़ा चखो।

---

[1] यानी रसूलों की मौजूदगी में क़ौमों पर अज़ाब नहीं आता, इसलिए आप ﷺ की मौजूदगी भी उन लोगों के अमनो अमान से रहने का सबब थी।

[2] मूर्तिपूजक जिस तरह अल्लाह के घर (ख़ानये काअबा) का नंगे होकर तवाफ़ करते थे, उसी तरह तवाफ़ करते वक़्त मुंह में उंगलिया डाल कर सीटियां बजाते थे और तालियां बजाते थे, इसको भी यह इबादत और सवाब का काम समझते थे, जिस तरह आज भी अनपढ़ सूफ़ी मस्जिदों और आस्तानों पर नाचते हैं, ढ़ोल पीटते और धमालें डालते हैं, यही हमारी नमाज़ और इबादत (अराधना) है, नाच-नाच कर अपने यार (अल्लाह) को मना लेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ (36)

३६. बेशक यह काफ़िर लोग अपना माल इसलिए ख़र्च कर रहे हैं कि अल्लाह के मार्ग से रोकें, तो ये लोग अपना माल ख़र्च करते ही रहेंगे, फिर वह धन उन के लिए पश्चाताप का सबब बन कर रह जायेंगे, फिर पराजित हो जायेंगे, और काफ़िरों को नरक की तरफ़ जमा किया जायेगा।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ (37)

३७. इसलिए कि अल्लाह (तआला) नापाकों को पाकों से अलग कर दे, और नापाकों को एक-दूसरे से मिला दे, फिर उन सब को इकट्ठा करे, फिर उन सब को नरक में डाल दे, ऐसे लोग पूरी तरह से नुक़सान में हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ (38)

३८. आप काफ़िरों से कह दीजए कि अगर यह लोग रुक जायें तो इन के सारे गुनाह जो पहले कर चुके हैं, माफ़ कर दिये जायेंगे[1] और अगर अपनी वही रीति रखेंगे तो पहले के (काफ़िरों के) लिए नियम लागू हो चुका है।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (39)

३९. और तुम उन से उस समय तक संघर्ष करो कि उन के अक़ीदा में बिगाड़ न रहे[2] और धर्म अल्लाह ही का हो जाये, फिर अगर यह रुक जायें तो अल्लाह (तआला) उनके अमलों को ख़ूब देखता है।

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ (40)

४०. और अगर मुँह फेरें, तो यक़ीन रखें कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा दोस्त है, वह अच्छा दोस्त और अच्छा मददगार है।

---

[1] रुक जाने का मतलब मुसलमान हो जाना है, जिस तरह हदीस में भी है, "जिस ने इस्लाम धर्म क़ुबूल करके सवाब का रास्ता अपना लिया, उससे उसके गुनाहों की पूछ-ताछ नहीं होगी, जो उसने जाहिलियत में किये होंगे, और जिसने इस्लाम धर्म क़ुबूल करके भी बुराई न छोड़ी, उस से पहले और बाद सभी अमलों का हिसाब होगा।" (सहीह बुख़ारी) एक दूसरी हदीस में है:

"इस्लाम पहले के गुनाहों को मिटा देता है।" (मुसनद अहमद, भाग ४, पेज, ९९)

[2] फ़ित्ना से मुराद है शिर्क (मिश्रणवाद) यानी उस समय तक जिहाद जारी रखो जब तक शिर्क ख़त्म न हो जाये।